Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

हिन्दी साहित्य में नारी आत्मकथा का भूमिका

गीता कुमारी[1], डॉ. सुरेश कुमार निराला[2]

[1]शोधछात्रा, मानविकी संकाय (हिन्दी)भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा

[2]सहायक प्रोफेसर,हिन्दी विभागाध्यक्ष एच. पी. एस. कॉलेज निर्मली,

सुपौल भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा।

Email: gitasitamarhi98@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180204
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 13-15
February - 2026

Submitted: 15 Jan. 2026
Revised: 25 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

साहित्य कला है, समाज का दर्पण है, परन्तु हिन्दी साहित्य का दायरा व्यापक और विस्तृत है। इसकी इस समृद्धि में यहाँ उपस्थित भिन्न स्वरों और मुद्दों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन हिन्दी साहित्य स्वरों में नारीवादी खेलन का खास स्थान है। हिन्दी साहित्य में नारी आत्मकथा का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। हिन्दी साहित्य के आत्मकथा में नारी के जीवन और उनकी अवस्थिति पर प्रारम्भ से ही बहुत कुछ लिखा गया है। परन्तु नारी साहित्य इसके साथ–साथ व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का साहित्य है, जहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना होती है। जहाँ सारा लेखन पुरूष द्वारा आत्मकथा लिखा गया है। इस स्थिति में हस्तक्षेप करते हुए नारीयों ने जब लिखना प्रारम्भ किया तो हिन्दी साहित्य में नारीयों के बारे में एक परिवतित दृष्टि कोण सामने आया। इस हिन्दी साहित्य के माध्यम से नारी आत्मकथा लेखन के सन्दर्भ में अपनी समझ को विकसित कर सकेगें और इस विषय से सम्बन्धित अपनी जिज्ञासाओं के उत्तर पा सकेगें।

मुख्य शब्द :– *नारी आत्मकथा साहित्य, प्रथा, शोषण, संघर्ष योगदान।*

भूमिका

साहित्य कला है, समाज का दर्पण है, परंतु स्त्री साहित्य इसके साथ–साथ व्यक्ति की स्वतंत्रता का साहित्य है, जहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना होती है। अतः यह सही ही कहा गया है कि जहाँ दमन है, आतंक है, भय है, संताप है तथा शोषण है वही उसके विरोध में स्त्री साहित्य सामने है। परिवर्तन एकदम नही होता । परिवर्तन की एक प्रक्रिया होती है। स्त्री की स्वतंत्रता का पहला चरण यही है कि वह दूसरों द्वारा दी गई देह की अवधारणा से मुक्त हो। अपनी देह के फैसले खुद ले। नारी की चेतना की पैरवी रचनात्मक जगत मे ंतब तक अधूरी, बेसतही और अयथार्थवादी होगी जब तक देष की आधी आबादी की शेष पैंतालीस प्रतिषत उत्पीड़ित ग्रामीण स्त्रीयों की बुनियादी समस्याएँ उकेरी नहीं जाएँगी। स्त्रीत्ववादी लेखन ने दो बातें तय कर दी है। पहली, कि एक स्वतंत्र साहित्यिक प्रकाय है। यह भले ही हिन्दी में कोई आक्रामक आन्दोलन नहीं बना है, लेकिन इसने साहित्येतिहास के मर्दवादी पाठ को विखण्डित कर दिया है। दूसरी यह कि आलोचना के चालू औजार उसे पढ़ने में नाकामयाब हैं। इसलिए नारी जाति को चाहिए कि अपनी मुक्ति के सवाल को प्राथमिकता दें और सोचें कि हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य क्या है? उसको पाने की हममें कितनी क्षमताएँ और संभावनाएँ हैं और उन्हें साकार करने के लिए हमें क्या करना है? अतः ऐसे में यह जरूरी है पूँजीवाद एवं पितृसत्ता से एक साथ लड़ा जाये।फिर तो पुरूष वर्ग महिलाओं के समर्थन में आयेगें। भारतीय संस्कृति में आदिकाल से नारी समाज एवं साहित्य का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है, बावजूद नारी आस्मिता का प्रष्न अनादि काल से अनेक रूढ़ियों और परम्पराओं या मर्यादा के अनुसरण में दबता आया है। हर काल में उन्हें अलग–अलग दृष्टिकोण और उपमों और उपमों से नवाजा गया है। आदिकाल में उसे 'षक्ति' कहा गया ,तो भक्तिकाल में उसे 'माया', रीतिकाल में उसे 'श्रृंगार' और 'भोग' की वस्तु तो आधुनिक काल में उसे केन्द्र बिन्दु बनाकर उस पर विमर्ष किये गये। जबकि नारी भी पुरूष के समान एक विचारषील है। उनका भी अपना बिन्दु सोच एवं व्यवहार है और उस सोच के अनुरूप समाज का निर्माण करना चाहती है। समय के प्रवाह के साथ परिस्थितियों में बदलाव आया और स्वयं नारी ने भी जागृत होकर अपनी आत्मवेदना को व्यक्त करने के लिए साहित्य जगत में प्रवेष किया।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
गीता कुमारी, शोधछात्रा, मानविकी संकाय (हिन्दी)भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा

How to cite this article:
कुमारी, . गीता ., & निराला, . सुरेश . कुमार . (2026). हिन्दी साहित्य में नारी आत्मकथा का भूमिका. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 13–15. https://doi.org/10.5281/zenodo.18932833

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18932833
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

हिंदी साहित्य में पिछले तीन–चार दषक में महिला लेखिकाओं ने अपना विषिष्ट योगदान दिया है। जिसमें मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती, अमृता प्रीतम, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा उल्लेखनीय हैं। ज्ञातत्व है कि कुछ समय पूर्व तक स्त्री लेखन पर यह आरोप लगाया जाता था कि यह सीमित दृष्टि का साहित्य है, जो परिवार के दायरे से बाहर नहीं निकलता। यह समय समाज के उन पेचीदा आयामों को नहीं उठाता जो कि समकालीन जीवन को परिभाषित कर सके। लेकिन धीरे–धीरे इन आरोपों का अनौचित्य स्वतः सिद्ध होता चला गया। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ–साथ आत्मसजगता को रेखांकन पिछले कुछ वर्षों में महिला लेखन का केन्द्र रहा है। कथा साहित्य नई सदी में अधिक स्त्री केन्द्रित बना है। कथालेखन के क्षेत्र में स्त्री लेखिकाओं ने अपने कथा लेखन को अधिक प्रासंगिक स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने विषयवस्तु की दृष्टि से नई जमीनों को तलाषा है और समस्याओं को सरोकर के नये कोणों से प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य विषेषकर महिला लेखिकाओं द्वारा स्त्री जीवन के अनके अनछुए पहलुओं को उजागर करने में समर्थ हुई हैं, जिनका कि स्वरूप नहीं था। आज स्त्री लेखन में आंचलिक परिवेष में संघर्षषील स्त्री ने नये और बदलते चित्र दिखाई दे रहे हैं आज देखें तो गीतांजलि श्री, अलका सरावगी, प्रभा खेतान, जया जादवानी, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, मधु कांकरिया, महुआ माँझी, अनामिका आदि लेखिकाओं ने पहले से मौजूद स्त्रीवादी स्वीवादी लेखन को नये सन्दर्भो ने नयी अभिव्यक्ति और नये मुहावरों को सर्जित करते हुए प्रभावषाली स्वरूप देने में समर्थ दिखती है। पारंपरिक स्त्रीवादी विचारधारा से अलग नारी की दैहिक स्वतंत्रता के प्रष्न को पीछे छोड़ते हुए स्त्री व्यक्तित्व को पुरूष निरपेक्ष दृष्टि से प्रस्तुत करने का नूतन प्रयास नवागन्तुक लेखिकाओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है। कथा साहित्य की विषयवस्तु के चयन में समकालीन बोध के साथ–साथ षिल्प विधान में भी पर्याप्त नवीनता दिखाई देती हैं अभिव्यक्ति को धारदार शैली नई सदी के महिला लेखन की विषिष्टता है। भारतीय समाज में स्त्री के नित बदलते हुए स्वरूप तथा उसकी बदलती हुई भूमिका को इन लेखिकाओं ने विस्मयकारी साहस के साथ प्रस्तुत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसी संदर्भ में महिलाओं द्वारा रचित आत्मकथा लेखन में भी साहित्य जगत को उद्वेलित किया है। अकस्मात् महिला आत्मकथा लेखन में गौरतलब वृद्धि हुई है। इन आत्मकथाओं ने स्त्री विमर्ष को परखने के लिए नयी दृष्टि प्रदान की है।

अद्यतन हिन्दी साहित्य में महिला–लेखन में एक तरह से बाढ़–सी आ गई है, चाहे वह लेखन का कोई भी विधा क्यों न हो। एक से बढ़कर एक आत्मकथा समाने आ रही है। यथा–अमृता प्रीतम का रचना "रसीदी टिकट', मन्नु भंडारी कृत "एक कहानी यह भी'' कृष्णा अग्निहोत्री की, "लगता नहीं है दिल मेरा'' कृष्णा सोबती कृत, सोबती–वैद संवाद चन्द्रकिरण सोनरिक्षा कृत पिंजरे की मैना, पद्मा सचदेव कृत बूँद बावड़ी प्रभा खेतान की "अन्या से अनन्या" मैत्रेयी पुष्पा रचित, "कस्तुरी कुंडल बसै तथा "गुड़िया भीतर गुड़िया", तकमीना दुरानी, "मेरे आका अंधारी", तस्लीमा नसरीन कृत "मेरे बचपन के दिन" इत्यादि हिन्दी साहित्य के अमूल्य आत्मकथाएं है। महिला रचनाकारों ने अपने आत्मकथा द्वारा जो मर्दो के चेहरे से नकाब उतारा है, उससे मर्दवादी सोच में बौखलाहट देखा जा सकता है। इसे बौखलाहट का परिणाम है विभूतिनारायण राय का वह इंटरव्यू जो राकेष मिश्र के द्वार लिया गया था, उसमें –लेखिकाओं के लिए अमर्यादित शब्द 'छिनाल' का आरोप तक लगाया गया। फिलहाल स्त्री–विमर्ष बेवफाई के विराट उत्सव की तरह है। यों तो राजजी के इस हमले में कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, रमणिका गुप्ता आदि सभी लेखिकाएँ आती है, मगर यहाँ निष्चत ही इषारा मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा ''गुड़िया भीतर गुड़िया' की ओर है। कितना दोरंगी नीति है कि जब पुरूष स्त्रियों पर लिखे तो सब कुछ ठीक है और यदि नारी ने अपनी भाषा तथा अपनेनुसार लिखना शुरू किये तो पहाड़ गिर पड़ा। वस्तुतः रचनात्मक जवाब देने की जब शक्ति–प्रतिज्ञा नहीं होती तो ऐसी मर्दवादी लफंगई शुरू हो जाती है। महिलाएँ भी अब चुपचाप कहाँ रहने वाली थी। प्रतिक्रियास्वरूप महिला नेताओं, बुद्धिजीवियों और लेखिकाओं का ऐसा जबरदस्त विरोध आरंभ हुआ कि रायजी जैसे मानसिकतावादी लोगों को तत्कालीन को मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल और अनेक महिला संगठनों से अपने इस ''दुर्भाग्यपूर्ण शब्द–चुनाव के लिए" माफी माँगनी पड़ी।

स्त्री लेखन का विषय–वस्तु पूरे समाज और देष की हालात से संबंद्ध होने के बावजूद इसका केन्द्रीय मुद्दा महिलाओं से जुड़ा है। ऐसा होना इसलिए स्वभाविक है कि समुदाय सदियों को पीड़ा को भुगतती रही है। कुल मिलाकर रचनात्मक साहित्य सृजन में महिलाओं की भागीदारी में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। पर कुछ नारी लेखक के समालोचनात्मक विद्वानों का कहना है कि नारी का लेखन का विषय वस्तु सीमित अथवा बंधा हुआ है। मुख्यतः अपने लेखनी में पारिवारिक, सामाजिक एवं निजी समस्याओं से संबंधित मुद्दों को ही उठाती हैं। पर ऐसा आरोप लगाना उचित नहीं माना जा सकता है। यह स्वाभाविक है कि जिन समस्याओं एवं परिस्थितियों से उन्हें इसलिए गुजरना पड़ता है, उस विषय को प्राथमिकता मिलेगी ही। फिर आज कोई ऐसा बंदिष नहीं दिखता जहाँ पर मान लिया जाए कि लेखनी का यह क्षेत्र स्त्री और पुरूष के लिए सुनिष्चित है। लिखने में स्त्री पुरूष के विषयों के विषयों का बँटवारा अथवा निर्धारण पूरी तरह आज अप्रासंगिक हो चुका है। यह कहा जा सकता है कि भले ही महिलाओं के लेखन की अपनी कुछ सीमाएँ हो, पुरूषों की सत्ता को खुलकर चुनौती देने में उन्हें संषय होता हो, कुछ लोग उनकी बेबाकी को कुंठा एवं परंपरा के विरूद्ध मानते हो, तो कुछ लोग यह आरोप लगाते है कि जिस तरह से सेक्स पर बेकाकी से राय रखती है। उससे साहित्य भी विकृत हो रहा है, यह महिला साहित्यकारों एवं साहित्य दोनों के लिए ही चुनौती है। पर इस सबके बावजूद आज महिलाएँ बढ़–चढ़ का लेखन कार्य में जुड़ी हुई है और अच्छा–खासा पाठक वर्ग भी उनकी रचनों हो हौसला अफजाई कर रहा। वस्तुतः स्त्री–पुरूष दोनों की लेखनी साहित्य जमात जगत में पूरक है।

महिलाओं में आए जागृति, षिक्षा, स्वावलंबन एवं समाज में आ रहे बदलाव का ही नतीजा है कि महिला लेखन के क्षेत्र में नब्बे दषक से एक नए युग की शुरूआत और यह निंरतरता से कायम है। पहले जहाँ एकाध महिला लेखन कला से अपने को जोड़ती थी अथवा शौक रखते हुए अपना कैरियर बनाती थी, अब वह बहुतायत मे दिखी जा सकती है। इसी पृष्टभूमि में महिलाकृत आत्मकथा लेखन में भी प्रचुरता देखने को मिल रही है। आष्चर्य की बात है आत्मकथा लेखन अन्य विधाओं के तुलना में बाद में आई। संभवत इसका कारण यह कहा जा सकता है कि महिलाओं द्वारा रचित आत्मकथा कुछ संस्करण तक सीमित थी। हिन्दीत्तर भाषाओं में उन्नीसवीं सदी से ही महत्वपूर्ण आत्मकथाएँ मिलती है और जिसमें स्त्री–जीवन और उनकी जटिलताओं के समाज रूबरू होता है। देखें तो अठारहवीं सदी मे आत्मकथा का जन्म महान लोगों द्वारा अपनी जीवनी, उनकी गाथाओं,

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

संघर्षो इत्यादि से समाज को परिचय करवाने के लिए हुआ। निष्चित रूप में आत्मकथा में अपनी उपलब्धियों का बखान के बू से इनकार नहीं किया जा सकता था। उस समय ऐसा कोई उदाहरण नहीं दिखता जहाँ की आम व्यक्ति अपनी आत्मकथा को लिखा हो। संभवतः यही कारण है कि स्त्री आत्मकथा का आरंभ देर से हुई और थोड़ी संख्या में उपलब्ध होती है। इस संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि स्त्रियों की पुरूष प्रदान समाज की संरचनाओं में महिलाओं में इस प्रकार का हिम्मत आना आसान नहीं होता था। महिलाओं की इस प्रकार की वस्तु–स्थिति को नकारा नहीं कर सकता, परंतु आज आत्मकथा स्त्रियों की खुद की आवाज बनी है, जिनके माध्यम से उनके विचार एवं जीवन के उनके निजी अनुभव सामने आ रही है और वह भी उनकी खुद के नजरिये से।

समकालीन महिला आत्मकथा :

जिस प्रकार की भारतीयों की सामजिक पृष्ठभूमि है और लोग बौद्धिक रूप से अभी भी बहुत हद तक परंपरावादी है, उस परिवेष में महिलाओं के लिए आत्मकथा की रचना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं थी। उन्हें हमेषा समाज में दोयम दर्जे की स्थिति से गुजरना पड़ा है। वे किसी की बहू, बेटी, माँ इत्यादि के नामों से ही पहचानी जाती रही हैं। निष्चित रूप से महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए जो आंदोलन किये उनसे पुरूषवादी मानसिकता वाली समाज में पहचान मिली। इन कड़ी में स्त्री–आत्मकथा नारी समुदाय को जगाने एवं उनके प्रति समाज की नजरिया को बदलने में प्रभावी भूमिका निभाये है। महिलाकृत आत्मकथा ने एक तरह से साहित्यिक और सामाजिक दोनों स्तर पर स्त्री बहस को केंन्द्रीय मुद्दी बना दिया। हालाँकि भले ही 19वीं शताब्दी के अंतिम दषक के बाद आत्मकथा लेखन प्रयोग में आया हो, परंतु इस तरह के विचारों की नींव पूर्व के लेखन में हम देख सकते है। षिवरानी देवी, महादेवी वर्मा इत्यादि के स्मरण में स्त्री के सषक्त रूप को का दर्षन मिलता है। उन्होंने अपनी लेखनी में पुरूषवादी अहंकारी सोच को पूरे आत्मविष्वास के साथ विरोध कर स्त्री के अधिकारों एवं मान–सम्मान की बात कही है। आज बखूबी इस परंपरा को मैत्रेयी पुष्पा, रमणिका गुप्ता, मन्नू भंडारी, कौषल्या बैसंत्री जैसी महिलाओं ने अपनी आत्मकथाओं के द्वारा आगे बढ़ाया है। अपने अधिकारों के प्रति सजगता, अपने खिलाफ उठने वाला किसी भी प्रतिरोध का उटकर मुकाबला करना, अपने परिवारों के प्रति दायित्वों का निर्वहन, षिक्षा, स्वावलंबी, जीवन यापन, खुद से निर्णय लेने आदि तमाम पहलूएँ महिलाओं को सषक्त बनाती हैं इन तमाम मुद्दों को निडरता के साथ महिलाओं ने अपनी आत्मकथा में वर्णित की है। आत्मकथा में लेखिका जद्दोजहद करती दिखती है सही मायने में स्त्री विमर्ष से जुड़े तमाम पहलुओं को आत्मकथा में उठाया गया है, जो एक तरफ स्त्रियों की बेचारगी न्याय पाने की अभिलाषा को दर्षाती है तो दुसरी ओर उन में आए हुए आत्मविष्वास को भी दर्षाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम देखें सकते है कि आज महिलाएँ परंपरागत बंधन को तोड़ने हुए अपने हक–हकूक की बात कह रही है और उसे पा भी रही है। अब साहित्य पर पुरूषों का एकाधिकार नहीं रहा। समाज देष और दुनिया को अपनी दषा, दिषा और उत्थान से रूबरू करने के लिए पुरूषों के लेखनी पर निर्भर नहीं रहना पड़ रहा है। अब वे अपनी तमाम आकांक्षाओं, सस्याओं, अधिकारों अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्ति कर रही है। हिंदी साहित्य और लेखन में महिलाएँ अपना स्थान बनाये हुए है। लेखिकाओं ने नारी चेतना, नारी अस्मिता और नारी पीड़ा को युक्ति और तर्क के साथ निर्भीक और निडर होकर नारी शक्ति को व्यक्त किया है। मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, कमल कपूर, पदमा सचदेव, जेबा रषीद, अलका सरावगी, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया आदि अनके नाम की बहुत लम्बी सूची है, जिन्होंने अपने लेखन द्वारा काल परिवर्तन का संदेष दे रहीं हैं। सच्चाई तोयह है कि साहित्यिक क्या? महिलाएँ किसी अन्य क्षेत्रों में आज पीछे नहीं है। सभी क्षेत्रों में वे पुरूष के साथ साझेदारी निभाने को तेजी से अग्रसर हैं। उनमें आई चेतना और जागृति समाज में जो पारंपरिक छवि सदियों से बनी थी, उसको तेजीसे बदलने में कामयाब हो रही हैं। नारी लेखन के फलक बहुत व्यापक है, यद्यपि उनका लेखन प्रायः नायिका व महिलाओं से संबंधित मुद्दों के इर्द–गिर्द है। इसके साथ ही वे समाजिक दायित्वों का भी बखूबी निर्वहन कर रही है। अतः महिलाओं ने अपनी रचना में इन विषयों को प्राथमिकताएँ दी। महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से नारी अस्मिता कोएक सषक्त रूप प्रदान किये। भारतीय परंपरागत समाज के लिए यह स्त्री संदर्भ के एक नया अहसास था। आज स्त्री की पहली शर्त है, पराधीनता चाहे घर के भीतर हो या बाहर या भलीभाँति महिलाएँ समझ चुकी है। अब उन्हें पुरूषों के समान अधिकार चाहिए किसी भी सूरत में कमी नहीं। उन्हें पुरूष और सामाजिक हिंसा, दमन, उत्पीड़न और शोषण से मुक्ति चाहिए और वह भी अविलम्ब। नारी आदर्ष पत्नी के रूप में समाज द्वारा महिमामंडित कर जब चुपचाप पति या पुरूष का आदेष सिर झुका कर मानते हुए पतियों के जुल्मों को चुपचाप सहने का जमाना लद चुका है और इसकी पृष्टि कई महिला लेखिकाओं के आत्मकथाओं से स्पष्ट होता है।

संदर्भ सूची

1- यादव, राजेद्र :– हंस, संपादकीय, "तुम्हीं ने तो दिए हैं हथियार, सिंतबर 2010, पृ. 5
2- श्रीवास्तव, गरिमा :– "पुनः अंकुरित होने की इच्छा और सार्मथ्य की कहानी" समयांतर, जून 2008, पृ. 17–19
3- सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण :– पिंजड़े की मैना, पूर्वोदय प्रकाषन, नई दिल्ली, 2008, पृ.
4- अंसल, कुसुम :– जो कहा नहीं गया, राजपाल प्रकाषन, 1986 पृ. 4
5- वर्मा, महादेवी :– श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाषन इलाहाबाद, 2004 पृ. 66
6- यादव, वीरेन्द्र सिंह :– नई सहषाब्दी का स्त्री विमर्ष, साहित्यिक अवधारण एवं यथार्थ, राधा प्रकाषन नई दिल्ली, 2010 पृ.40
7- सिंह, सुधा :– नारी अस्मिता और विचार धारा, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद, 2004 पृ.66
8- शुक्ला, डॉ . उमा :– आधुनिक कथा साहित्य में नारी नई दिल्ली, 2010 पृ. 170
9- अनुसंधान हिन्दी विभाग, इलाहाबाद वि. इलाहाबाद अंक–8 पृ. 67
10- रोहिणी, अग्रवाल :– साहित्य का नारी स्वर, साहित्य भण्डार इलाहाबाद, 2015 पृ. 67